ओ३म्

परम श्रद्धेय, सत्यव्रती, वेदभक्त, सच्चे आर्य, आदर्श शिक्षक, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के साहित्य के अनूठे अध्येता, ऋषि–मुनियों के प्रति आदर्श निष्ठावन, जीवन में धनोपार्जन को महत्व न देने वाले, सत्याचरण को जीवन में धारण और पालन करने वाले, आदर्श स्वाध्यायकर्ता

श्री चण्डी प्रसाद शर्मा (ममगांई)

की सेवा में सादर समर्पित अभिनन्दन पत्र

महर्षि दयानन्द भक्त
चण्डी प्रसाद शर्मा ममगांई

हे ईश्वरभक्त ! आपने आर्य समाज के सम्पर्क में आकर महर्षि दयानन्द प्रोक्त एवं समर्थित वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन को ही अपने जीवन का ध्येय बनाकर ईश्वर के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया और वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत होकर ईश्वर की भक्ति में ही अपना समय समर्पित नहीं किया अपितु आपने अपने जीवन को पूर्णतः वैदिक जीवन पद्धति के अनुरूप बनाकर एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप धन्य हैं कि आपने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों की प्रेरणा से वेदों में विहित शिक्षा के अनुसार सच्चा आर्य जीवन व्यतीत किया।

पुरोवाक्

यह अभिनन्दन पत्र देहरादून में आर्य समाज के संगठन के सबसे प्रभावशाली स्तम्भ और प्रसिद्ध वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के यशस्वी सचिव श्री प्रेम प्रकाश शर्मा की प्रेरणा एवं निवेदन पर तैयार किया था जिसका परिवर्तित संक्षिप्त रूप आश्रम के 12 अक्तूबर, 2014 को गण मान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्पन्न भव्य शरदुत्सव पर आयोजित अभिनन्दन समारोह में इसके चरित नायक श्री चण्डी प्रसाद शर्मा ममगांई जी को भेंट किया गया। इस अभिनन्दन को हम समस्त धर्म प्रेमी आर्य जनता को सादर अवलोकनार्थ भेंट करते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य

हे विद्यानुरागी ! आपने बचपन से ही विद्यानुराग का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत कर अपने जीवन को धन्य किया है। आप कलजीखाल ब्लाक, पौड़ी गढ़वाल स्थित अपने जन्म स्थान से 14 वर्ष की अवस्था में रोजगार के साथ साथ शिक्षा ग्रहण के उद्देश्य से देहरादून पहुंचे थे। आपको एक आर्य समाजी मित्र मिला जिससे आपको आर्य समाज की मान्यताओं और सिद्धान्तों का ज्ञान हुआ। आपने सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त किया जिससे भावी जीवन के निर्माण का बीजारोपण हुआ। कुछ काल बाद आपने सत्यार्थ प्रकाश पुनः प्राप्त कर पढ़ा जिससे आपके भावी जीवन की दिशा व दशा निर्धारित हुई। आप महर्षि दयानन्द एवं इतर वैदिक साहित्य के दीवाने सिद्ध हुए और आपने रात–दिन वैदिक साहित्य के अध्ययन में ही अपने जीवन का अधिकांश समय व्यतीत कर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। इस स्वाध्याय से प्राप्त संस्कारों के कारण धनोपार्जन के प्रति आप कभी आकर्षित नहीं रहे अपितु जो धन आपको प्राप्त हुआ उसका अधिकांश भाग आपने पुस्तकों का क्रयण कर उनके अध्ययन में ही लगा कर स्वाध्याय का एक नया प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया।

हे वेदभक्त ! आप आर्य समाज के साहित्य को पढ़कर वेदों के प्रति आकर्षित हुए और अपनी रात्रि–दिवां स्वाध्याय की प्रवृत्ति के परिणाम से वेदों के अध्ययन में प्रवृत्त हुए। आपने स्वाध्याय से जिस ज्ञान को प्राप्त किया उसके अनुसार आपने स्वामी दयानन्द के सभी वैदिक सिद्धान्तों और मान्यताओं को सत्य पाया और उसके अनुसार अपना जीवन ऐसा बनाया जो आदर्श युवाओं और गृहस्थियों के लिए अनुकरणीय है। आज भी आप अपने जीवन का अधिकतम् समय वेद और वैदिक स्वाध्याय में ही समर्पित करते हैं। आपका वैदिक साहित्य में अनुराग व प्रेम निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। आप अपनी इस वेद भक्ति के लिए धन्य हैं।

हे दयानन्द भक्त ! आप महर्षि दयानन्द के समस्त साहित्य को पढ़कर उसके अनुरूप दिव्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपका जीवन प्रेरणादायक है और एक आदर्श ज्ञानवृद्ध पुरूष के रूप में हम आर्यों के लिए अनुकरणीय हैं। अपने जीवन की इस गौरवपूर्ण स्थिति को प्राप्त करने के लिए आपने अनेक कठोर नियमों का सहर्ष पालन किया है। **आपकी दयानन्द भक्ति आदर्श एवं अनुकरणीय है।** जीवन के 82 वर्ष व्यतीत कर लेने पर आज भी आप शिशु सुलभ व्यवहार करते हुए अपने आगामी जीवन में भी महर्षि दयानन्द के शिष्य एवं भक्त बन कर जीवन को अपवर्ग की

ओर ले जाने के लिए कामना करते हुए तप व पुरूषार्थमय जीवन व्यतीत करने में संलग्न हैं। आपमें अपने नाम व जीवन के प्रति किसी प्रकार की कोई एषणा नहीं है। आप महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रतिरूप हैं जिसमें ईश्वर, वेद व महर्षि दयानन्द के प्रति असीम श्रद्धा व भक्ति है। अपने इस स्वभाव व जीवन की श्रेष्ठता के लिए आप धन्य हैं।

हे मातृ पितृ भक्त आर्य मनीषी ! आप मातृ शक्ति के प्रति अपने जीवन के बाल्यकाल से ही श्रद्धा, कृतज्ञता व गहरे सम्मान की भावना से ओत–प्रोत हैं। अपनी माताजी को दिन भर घरेलू कार्यों में व्यस्त देखकर आपमें उनके प्रति गहरी आत्मीय संवेदनापूर्ण भावनायें प्रकट हुई थीं जिससे प्रेरित होकर आपने उनके कार्यों में सहयोग करना व अपने भाई व बहिनों को अपने कार्य स्वयं करने की प्रेरणा की और जीवन भर उसका निर्वाह किया। इसी प्रकार से आपने अपनी जीवनसंगिनी के गृहस्थ के कर्तव्यों में भी अपना अधिक से अधिक सहयोग किया। समाज में जहां कहीं भी आप माताओं को गृह कार्यों में व्यस्त देखते हैं और सन्तानों द्वारा अपने समस्त निजी कार्य भी अपनी माताओं से करातें हैं, वहां भी आप माताओं व बच्चों को सदोपदेश देकर उनका मार्गदर्शन करते हैं। माताओं के प्रति आपके हृदय में बाल्यकाल से ही जो उच्च भावनायें हैं एवं स्तुत्य एवं अनुकरणीय हैं।

हे आदर्श शिक्षक ! आपने स्वपुरूषार्थ से एम.ए. (दर्शन शास्त्र, इतिहास, हिन्दी एवं अंग्रेजी) कर शिक्षा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इससे पूर्व आपने आर्य कुमार सभा द्वारा संचालित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओं के अर्न्तगत सिद्वान्त वाचस्पति आदि अनेक परीक्षायें भी उत्तीर्ण की थी। आपने तत्वज्ञान विद्यापीठ, मुम्बई में 12–13 वर्षों तक मुख्यतः गुजरात के विद्यार्थियों को अध्ययन कराया। आपके त्याग–संयम–अपरिग्रह–लोभ से शून्य व सदाचार युक्त जीवन से प्रेरित हुए आपके देश–विदेश में कार्यरत अनेक शिष्य आज भी आपसे जुड़े हुए हैं और आपसे मिलते–जुलते रहते हैं और अपनी गुरू भक्ति का परिचय देते हैं। आप अपने विद्यार्थियों को कोर्स की पुस्तकें तो पढ़ाते ही थे, साथ में आपने आर्ष साहित्य का जो ज्ञान अर्जित किया था, उससे भी अपने विद्यार्थी शिष्यों को लाभान्वित करते रहते थे जिससे वह भी अपने भावी जीवन में उन वैदिक मूल्यों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर उससे लाभान्वित हों सकें। आपने न केवल स्वाध्याय में ही अपना जीवन व्यतीत किया अपितु आयु के 50 वर्षों तक आप अपना शैक्षिक अध्ययन करते हुए परीक्षायें देते रहे। आगे पढ़ने व न पढ़ने के लिए भी आपने अपनी माताजी से पूछा था और उनकी सहमति से ही अपना विद्यालीय अध्ययन समाप्त किया परन्तु इतर वैदिक साहित्य का अध्ययन अब भी निरन्तर जारी है। अन्य ग्रन्थों के साथ आप सत्यार्थ प्रकाश भी नियमित रूप से पढ़ते हैं। 10 से अधिक बार आपने सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर आर्य मनीषी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी की स्मृति को ताजा किया है। आपके अनुभव भी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के समान हैं जिसके अनुसार सत्यार्थ प्रकाश को जितनी बार भी आपने पढ़ा, आपको हर बार नये अर्थों का अनुभव व ज्ञान हुआ। आज के समय में यह एक ऐसा यथार्थ उदाहरण है जिसकी की कल्पना ही की जा सकती है। आपके कार्य ऐसे हैं जिसमें पूर्ण देश भक्ति एवं समाज सेवा के दर्शन होते हैं। आपका जीवन एकांगी न होकर सर्वांगीण एवं बहुआयामी जीवन रहा है, जिस पर हम गर्व करते हैं।

हे आदर्श आर्य पुरूष ! आपने 27 जुलाई, सन् 1932 को पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड के ग्राम कलजीखाल ब्लाक में जन्म लेकर अपनी जन्म भूमि को पवित्र किया। आप 4 बहिन व 3 भाईयों के परिवार में से एक थे। अपने ग्राम में सन् 1946 में मिडिल परीक्षा पास करके आप टिहरी गढ़वाल पहुंचे। वहां आपने लोगों को अक्षराभ्यास व प्राथमिक कक्षाओं के कुछ विषय पढ़ायें। टिहरी से लौटकर आपने अपने ग्राम में 3 वर्ष तक एक प्राइमरी पाठशाला में अध्ययन कराया। सन् 1949 में आपने देहरादून आकर वन विभाग के अन्तर्गत राजपुर स्थित कार्यालय में 4 महीने तक तथा इसके बाद कुछ समय कृषि विभाग में कार्य किया। वन विभाग में कार्य करते हुए आपका परिचय एक आर्य समाजी मित्र से हुआ जिससे आपको आर्य जीवन पद्धति का परिचय मिला। इस मित्र से आपको महर्षि दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी सहित कुछ आर्य महापुरूषों के जीवन व कार्यों के अतिरिक्त आर्य समाज के सिद्धान्तों का परिचय भी मिला। इस मित्र ने आपको बताया था कि ईश्वर सर्वव्यापक है और मूर्तिपूजा वेद विरूद्ध अनुचित कार्य है। फरवरी, सन् 1950 में आप सेना में भर्ती हुए और 4 वर्ष के सेवाकाल में देहरादून, जम्मू–कश्मीर तथा बंगलौर में रहे। इसी दौरान आपने मार्च 1952 में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। जम्मू कश्मीर में अपनी पदस्थापना के समय आपने सेना की बिग्रेड की कान्टीन में कार्य किया जहां अपने पहली बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द के चित्र के दर्शन किये जिसके नीचे पंक्ति अंकित थी – **''सर्वस्व त्यागी दयानन्द''।** इसका गहरा प्रभाव आप पर हुआ। सन् 1952 में इन्हीं दिनों आपने **''हमारे राष्ट्र निर्माता''** पुस्तक भी पढ़ी। ***सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर आपको प्रेरणा हुई कि योगी बनकर ईश्वर साक्षात्कार करना चाहिये।*** आपके अनुसार सत्यार्थ प्रकाश ने आपकी आत्मा को ignite किया और चेतना को जगाया। इसी भावना से आपने सेना

की नौकरी छोड़ी थी और बंगलौर से घर आ गये थे। दिल्ली आकर आपने सन् 1954 में अपनी समस्त जमा पूंजी लगभग 2,500 रूपये से गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली जाकर श्री गोविन्दराम जी से महर्षि दयानन्द, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती आदि विद्वानों का साहित्य खरीद लिया और सभी पुस्तकें एक बोरी में भर कर अपने घर पौड़ी गढ़वाल आ गये। माताजी के पूछने पर आपने कहा कि मैं इस बोरी में विद्याधन लाया हूं। घर के पास एक गुफा में एकान्तवास करते हुए यहां आपने निरन्तर 2 वर्षों तक इन सभी ग्रन्थों को पढ़ा। इस अवधि में आप किसी से मिलते भी नहीं थे। यहां आप शरीर सम्बन्धी नित्य कर्म कर्मों के अतिरिक्त शेष सारा समय स्वाध्याय में ही बिताया करते थे। इसके साथ ही आपने इण्टर परीक्षा की पुस्तकों का अध्ययन भी किया और परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको इस बीच यह लगा कि कुछ धन कमाना आवश्यक है। आप दिल्ली आ गये और प्रकाशन विभाग में नियुक्त हो गये। सन् 1967 तक आप यहां रहे और यहां रहकर बड़ी संख्या में अनेक विषयों की पुस्तकों को पढ़ा। स्वाध्याय का ऐसा शौक आपको था कि यदि आपको कहीं कोई भी छपा या लिखा हुआ कागज मिल जाता था तो उसे आप पूरा पढ़ जाते थे। यहां रहकर आपने धनोपार्जन के साथ अत्यधिक स्वाध्याय किया। **पुनः आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों ने मन पर प्रभाव किया और आप सेवा से त्याग पत्र देकर अपने घर आ गये और यहां ग्रामवासियों के पूर्ण स्वावलम्बन के लिए आर्य समाज के विचारों की छाया में ग्रामोत्थान का कार्य करते हुए अपनी योजना को पौड़ी में चलाया।** इसका एक उद्देश्य यह भी था कि वहां के युवकों को नगरों में पलायन न करना पड़े। इसके साथ आपने वहां सहकारी कृषि योजना बनाई और चलाई। उद्यान लगाने की आपने लोगों को प्रेरणा की। यहां आप 14 वर्षों तक रहे। यहां रहते हुए आपने बच्चों को स्कूल तक न भेजा और उन्हें स्वयं ही पढ़ाते रहे। छठे वर्ष में आपने उन्हें भिन्न कक्षाओं में उनकी योग्यतानुसार भर्ती कराया। यहां कार्य करते हुए आप घोर आर्थिक संकट का शिकार हुए और योजना पर बारह हजार रूपयों का आर्थिक संकट आ गया। आपने आगे चलकर इस धनराशि का अपना भाग रूपये 3,500/– बिना किसी के कहे आत्मानुशासन व नैतिकता के आधार पर ही मना करने पर भी चुकाया। इस संस्था का आडिट करने वाले अधिकारियों ने अपनी टिप्पणी में लिखा था कि आप एक उच्च कोटि के अद्भुत सज्जन व्यक्ति हैं। पौड़ी में रहते हुए आपने बी.ए. की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली थी।

अपने गांव से आप अपने एक मित्र व सम्बन्धि की प्रेरणा से सन् 1976 में मुम्बई पहुंचे और यहां स्वाध्याय मिशन के एक आवासीय शिक्षा केन्द्र ''तत्वज्ञान विद्यापीठ'' (Institution of Philosphy) में शिक्षक की नियुक्ति प्राप्त कर ली। यहां आपने लगभग 13 वर्षों तक भारतीय धर्म और संस्कृति तथा जनरल स्टडीज आदि विषयों का अध्ययन कराया जिनमें लगभग 95 प्रतिशत विद्यार्थी गुजराती होते थे और कोर्स की अवधि 2, 4 व 6 वर्षों की थी। क्योंकि आपको तत्वज्ञान पढ़ाना था, अतः आपने दर्शन शास्त्र से आरम्भ कर हिन्दी, अंग्रेजी तथा इतिहास में भी स्नात्कोत्तर उपाधियां प्राप्त कर लीं। आपने स्नातक कक्षा के विद्यार्थियों को हिन्दी व अंग्रेजी का भी अध्ययन कराया है। इसके बाद से आप देहरादून में रह रहे हैं।

आप कभी आर्य समाज के सदस्य नहीं बने परन्तु आपने सारा जीवन आर्य सिद्धान्तों व मान्यताओं के अनुरूप व्यतीत कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है जिस पर हमें गर्व है। आपने महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान निर्णय का भी विशद अध्ययन किया और इस विषय पर प्रामाणिक लेख लिखे जो प्रसिद्ध पत्रिका 'वेदवाणी' में प्रकाशित हुए। सम्प्रति आप मोहब्बेवाले में डाकघर के निकट निवास करते हैं और अपना स्वाध्याय व वैदिक दिनचर्या में निरत रहकर जीवनयापन कर रहे हैं।

आपके द्वारा किए गये महनीय कार्यों के लिए हम आपका शत्–शत वन्दन करते हैं और आपको विनम्रतापूर्वक यह अभिमन्त्रण पत्र प्रस्तुत कर आपसे विनती करते हैं कि आप हमारे इस भक्ति व कृतज्ञता पूर्ण भावनाओं से युक्त पुष्प–पत्र रूपी इस अभिनन्दन पत्र को स्वीकार करें।

हम हैं :

दर्शन लाल अग्निहोत्री
प्रधान

इं. प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी मार्ग, देहरादून–248001 के समस्त अधिकारी, सदस्यगण एवं आयोजन में उपस्थित श्रोतागण